राज कॉमिक्स

मूल्य 6.00 संख्या 221

बांकेलाल और मौत का त्रिशूल

Come To www.PyareToons.com For More Comics

ABHI मौत का त्रिशूल

चित्रांकन: बेदी
कहानी: परिन्दर जुनेजा
संपादन: मनीष चन्द्र गुप्त

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.Com For More Comics

अब मैं तुम्हें यह शक्ति देती हूं, जब तक मेरे द्वारा दी यह तलवार रूपी शक्ति तुम्हारे पास है किसी भी राज्य की पूरी सेना मिलकर भी तुमसे विजय नहीं पा सकती है।

अद्भुत!

मां शक्तिदायिनी से शक्ति पाकर पुष्टान्त प्रसन्न हो गया—

शक्ति मां की सदा जय-जयकार हो।

ओह! मैं समझ गया मां! मैं शंकर भगवान से आशीर्वाद अवश्य ही लूंगा।

दैत्यराज, यदि तुम वाकई सारी पृथ्वी पर राज करना चाहते हो तो पहले तुम्हें भगवान शंकर का भी आशीर्वाद ले लेना होगा।

फिर दूसरे दिन ही जंगल में शिवलिंग की स्थापना कर पुष्टान्त शंकर भगवान की तपस्या में लीन हो गया—

ओऽम् नमः शिवाय

इधर एक दिन बांकेलाल शिकार खेलने के उद्देश्य से जंगल गया, लेकिन काफी देर तक जंगल में भटकने के बाद भी उसे कोई शिकार नहीं मिला तो वह सोचने लगा—

उफ! अगर आज मैं बिना शिकार किए वापस लौटा तो राजा और मंत्रीगण मेरी हंसी उड़ाएंगे। सब कहेंगे कि बांकेलाल शिकार के लिए जंगल गया था और खाली हाथ वापस लौट आया।

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

यह सब सोचता हुआ वह आगे बढ़ ही रहा था कि तभी –

वाह! शेर। वह भी गहरी निद्रा में। मजा आ गया।

अगले ही पल–

गुर्र-र्र

सर्र सर्र

लेकिन जल्दबाजी में बांकेलाल का निशाना कुछ चूका, तीर शेर के पेट की बजाय उसके पैर में लगा। इसी के साथ शेर की नींद खुली...

...वह उछलकर एक ओर भागा कि तभी जिस स्थान पर थोड़ी देर पहले वह सोया पड़ा था वृक्ष की एक मोटी भारी डाल आकर गिरी–

उफ! काश! मैं थोड़ी देर और इस शेर पर तीर न चलाता तो यह इस डाल के नीचे दबकर मर जाता...

धड़ाम

...और तब मैं इस शेर को उठाकर राजा विक्रमसिंह के सामने ले जाता और...

वाह! बांकेलाल, तुमने मात्र किसी वृक्ष की डाल द्वारा ही इसे मार गिराया।

ज...जी महाराज!

वाह! बांकेलालजी, आप सचमुच एक बहादुर इंसान हैं।

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

uploaded by abhi(9119) on ic.tokkal.com)
Come To www.Pyarefoons.com For More Comics

...लेकिन साथ ही मेरी फूटी किस्मत, मैं जब भी किसी का बुरा चाहता हूं, तो उसका भला हो जाता है, लेकिन ऐसा होता क्यों है...?

तभी सोचते-सोचते उसके मस्तिष्क में एक नई शरारत के कीड़े कुलबुलाने लगे —

मेरे ख्याल से मेरी हर योजना में दो-एक कमियां रह जाती हैं, जैसे एक तो मेरी हर योजना में जरूरत से ज्यादा झोल होता है...

... और दूसरा, जब भी कोई सुअवसर मेरे हाथ आता है, मैं उस समय कुछ जरूरत से ज्यादा लालच कर बैठता हूं।

लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। मैं वहां से राजमहल लौटते ही अब की ऐसी योजना बनाऊंगा कि जिसमें कोई भी त्रुटि न हो।

फिर उसी शाम अपने शयनकक्ष में लेटा-बांकेलाल एकाएक कुछ सोचकर उछल पड़ा —

वो मारा पापड़ वाले को। क्या शानदार योजना आई है मेरे दिमाग में।

दूसरे दिन सुबह-सवेरे बांकेलाल राजा विक्रमसिंह के शयनकक्ष में पहुंचा —

...राजा विक्रमसिंह, तू मुझ पर अंधविश्वास करता है न? अब की बार मैं अपनी इसी स्थिति का फायदा उठाऊंगा। ही-ही-ही।

महाराज की जय हो।

आओ-आओ बांकेलाल, कहो कैसे आना हुआ?

फिर आगे चल कर [illegible] के [illegible] बनाया। —

Always Buy Original Comics And Save Comic Industry

Come To www.PuareToons.com For More Comics

महाराज, मैं कर्मचारियों के लिए जंगल गया था। वहां मैंने एक बहुत ही विचित्र दृश्य देखा। मैं चाहता हूं कि आप भी मेरे साथ जंगल चलकर...

बांकेलाल! मैं समझ गया। जब तुम्हारी इच्छा है तो मुझे तुम्हारे साथ जंगल चलना ही पड़ेगा।

फिर थोड़ी ही देर बाद—

लगता है कोई बहुत विशेष बात है जो आज सुबह-सुबह ही बांकेलाल ने मुझे जंगल चलने को कहा है।

फिर जंगल पहुंचकर एक जगह रथ रोकता हुआ बांकेलाल बोला—

बस, महाराज! यही है वह जगह जहां कल मैंने वह विचित्र दृश्य देखा था...

हुम्म!

...लेकिन महाराज, इससे पहले कि मैं आपको वह विचित्र दृश्य दिखाऊं, आप एक पत्र महामंत्री धर्मसिंह के नाम लिखें...

पत्र...?

...हां। जिसमें आप कुछ दिनों के लिए अपने समस्त अधिकार मुझे दे रहे हैं।

क्या? आखिर बांकेलाल, ऐसा क्यों चाहता है?

लेकिन ऐसा राजा विक्रमसिंह ने एक ही पल सोचा...

...और अगले ही पल वह मुस्कराते हुए बोले

कुछ दिनों के लिए क्यों? मैं अपने समस्त अधिकार हमेशा-हमेशा के लिए तुम्हारे लिए लिख सकता हूं। क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम जब भी, जो भी करोगे मेरी ही भलाई के लिए करोगे।

इस विश्वास के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद महाराज...

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.Pyareloons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

इस तरह समस्त अधिकार प्राप्त होते ही बांकेलाल अवसर देखकर राजकोष से धन चुरा-चुराकर...

हा-हा-हा। धीरे-धीरे मैं यह सारा राजकोष खाली कर दूंगा।

...नगर से बाहर पुराने किले के खण्डहर में स्थ सुरक्षित जगह पर जमा करने लगा-

हा-हा-हा। जल्दी ही यह गाड़ा स्वर्ण मुद्राओं से भर दूंगा। हा-हा-हा।

!?

लेकिन वह इस बात से कतई बेखबर था कि उसकी एक-एक हरकत पर पूरी नजर रखी जा रही थी।

महामंत्रीजी, बांकेलाल कोषागार से धन चुरा-चुराकर पुराने किले के खण्डहर में पहुंचा था है।

हूं। ठीक है गुप्तचर, तुम बांकेलाल पर पूरी नजर रखो, लेकिन ध्यान रहे उसे किसी बात का सन्देह न होने पाए।

पता नहीं बांकेलाल चाहता क्या है?

उधर एक दिन दैत्यराज दुष्टान्त अपनी दैत्य सेना के साथ विशालवाद राज्य की ओर चल पड़ा-

हा-हा-हा। अब जल्दी ही सम्पूर्ण पृथ्वी पर मेरा राज होगा। हा-हा-हा।

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Original Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

जल्दी ही राजा विक्रमसिंह की सेना जिसका नेतृत्व उस समय महामंत्री धर्मसिंह कर रहा था त्राहि-त्राहि कर उठी—

हा-हा-हा

उफ!

हाय!

भागो!

उफ! महाराज की गैर मौजूदगी में मुझे दुश्मनों से हार माननी पड़ेगी।

भागो!

अगले ही पल हैय्यराज महामंत्री के पास पहुंचा और—

हा-हा-हा।

हे प्रभु! मुझे शक्ति दो।

टनने

तुम्हारे प्रभु ने अपनी शक्ति मुझे पहले से ही दे रखी है। हा-हा-हा।

उफ!

फिर—

सैनिको, बन्दी बना लो इस बूढ़े को।

उफ!

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

अगले ही पल जब वह त्रिशूल किसी अलौकिक ढंग से उस खड्डे से बाहर निकला तो उसमें राजा विक्रमसिंह का हीरों से जगमगाता हुआ राजमुकुट कैसा था —

फिर देखते ही देखते —

पता नहीं यह त्रिशूल कैसा था? और इस चोरी किए खजाने में से सिर्फ राजा विक्रमसिंह का राजमुकुट जो कि वह...

...कभी पहनते नहीं थे, जो राजकोष में ही उपेक्षित सा पड़ा रहता था, उसे क्यों उठा ले गया?

फिर कुछ सोचने के बाद भी बांके लाल को उस विचित्र त्रिशूल के बारे कुछ समझ में नहीं आया तो उस धन के गड्ढे को मिट्टी और फिर झाड़ झंकारों से ढका —

मैं एक या दो दिन में इस धन दौलत के साथ यह नगर छोड़ दूंगा।

...फिर वह वापस राजमहल की ओर चल पड़ा।

उधर दैत्यराज दुष्यन्त द्वारा फेंका शिव का त्रिशूल जल्दी ही वापस लौटा —

अगले ही पल त्रिशूल के अग्रिम भाग में टंगा राजमुकुट दुष्यन्त के चरणों में गिरा...

हा-हा-हा

उफ, महाराज का राजमुकुट।

...फिर देखते ही देखते वह त्रिशूल राजदरबार से बाहर निकल गया —

ओह! शंकरजी ने कहा था कि यह त्रिशूल मैं सिर्फ एक ही बार प्रयोग कर सकता हूं।

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyaraToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

वाह! क्या बात कही है तुमने बांकेलाल! हम अपने सारे शत्रुओं को एक ही दिन, एक साथ मारेंगे। हा-हा हा।

पता नहीं बांकेलाल के मन में मेरी भलाई की कोई योजना है या वाकई यह नमक हरामी पर उतर आया है।

आहा-हा-हा-हा

तभी एकाएक बांकेलाल कुछ सोचता हुआ बोला—

दैत्यराज, आज तो आपकी पहली विजय की खुशी में जश्न होना चाहिए।

वाह! नाच-गाना? लेकिन इसकी व्यवस्था कौन करेगा?

मैं करूंगा सारी व्यवस्था

फिर उस रात—

हा-हा-हा। और नाचो मदालसा! खूब नाचो। हा-हा-हा।

वाह! मजा आ गया।

रासलीला का यह कार्यक्रम जब सुबह समाप्त हुआ तो—

वाह! बहुत खूब। ऐसे खूबसूरत नृत्य के बारे में तो हमने सुना था कि सिर्फ देवलोक में इन्द्र के दरबार में ही होता है, लेकिन आज उससे भी खूबसूरत नृत्य हमने इसी पृथ्वी पर देखा है...

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareTomsBook.com For More Comics

...वाह! मजा आ गया मदलता, ये लो अपना इनाम। और सुनो यह नाच-गाने की महफिल आज फिर दोपहर से शुरू होगी।

जी महाराज!

वाह! इसको कहते हैं राजा, जो जिन्दगी का आनन्द लेना जानता है, और स्कन्ध विक्रमसिंह ऊंह कंजूस, कहीं का।

लेकिन एक दिन इसी रागरंग की महफिल में —

महाराज, आप इन रागरंग की महफिलों में अपना मूल उद्देश्य भी भूल गये मालूम होते हैं।

कैसा मूल उद्देश्य

!?

!!!

महाराज, आप तो सारी पृथ्वी पर अपना राज्य करने के उद्देश्य से दैत्य नगरी से निकले थे।

अरे! हां, याद आया।

!?

सेनापति कालांत! अब हमारे इस उद्देश्य को तुम और बांकेलाल मिलकर पूरा करोगे...

!!!

...और शक्ति मां से मिली मेरी तलवार बांकेलाल के पास रहेगी। और तुम लोग आज ही विजय यात्रा पर रवाना होगे।

है, यह क्या!

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

फिर दैत्यराज की आज्ञा पर दैत्यों और विशालगढ़ की सेना के साथ बांकेलाल विजय यात्रा पर निकल पड़ा –

सेनापति कालांत, मेरे ख्याल से तो हमें सबसे पहले पड़ोस में सुन्दर नगर राज्य पर आक्रमण करना चाहिए।

बांकेलाल, तुम्हारे हाथ में मां शक्ति की तलवार रूपी शक्ति है अतः तुम जिधर भी चलोगे विजय हमारी ही होगी।

आक्रमण

आक्रमण

फिर रूपनगर...

मारो।

आ... ई

...शक्तिनगर...

बन्दी बनाओ इस राजा को। हा-हा-हा।

धू... बांकेलाल?

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareFriends.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PuareToonsicom For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

...इसके बाद जब सेनापति मकराक्षर ने तुम्हें उठाकर यहाँ लाने के लिए तुम्हारे शरीर का स्पर्श किया तो उन्हें आश्चर्य हुआ...

अरे! अभी कुछ देर पहले जब इसे अपना भोजन समझकर इसके शरीर तक पहुंचने की कोशिश कर रहे थे तो ऐसा लग रहा था कि कोई अदृश्य सुरक्षाचक्र चल रहा है, लेकिन अब तो ऐसी कोई बात नहीं लगती।

फिर तुम्हें यहां लाया गया और जब मकराक्षर ने मुझे पूरी बात बताई तो एक पल के लिए तो मैं हैरान रह गया...

उफ! कितनी अजीब बात बना रहा है। पाताललोक का राजा! मुझे तो यह सब एक स्वप्न जैसा लग रहा है।

...लेकिन अगले ही पल...

हैरान मत हो देववक्र! इसकी सुरक्षा मैं कर रहा था।

प्रभु आप? प्रभु पहले आप मेरा प्रणाम स्वीकार करें।

...फिर मुझे आशीर्वाद देने के बाद भगवान शंकर बोले –

ठीक है, देववक्र! पृथ्वी पर धर्म-कर्म जीवित रहे उसके लिए विक्रमसिंह का जीवित रहना आवश्यक है। लेकिन अभी इसे लगभग बीस दिनों तक पृथ्वी पर स्वतंत्र है अतः तुम्हें इसे बीस दिनों तक अपने पास ही रोके रखना है।

जी भगवन!

Always Buy Original Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PuareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

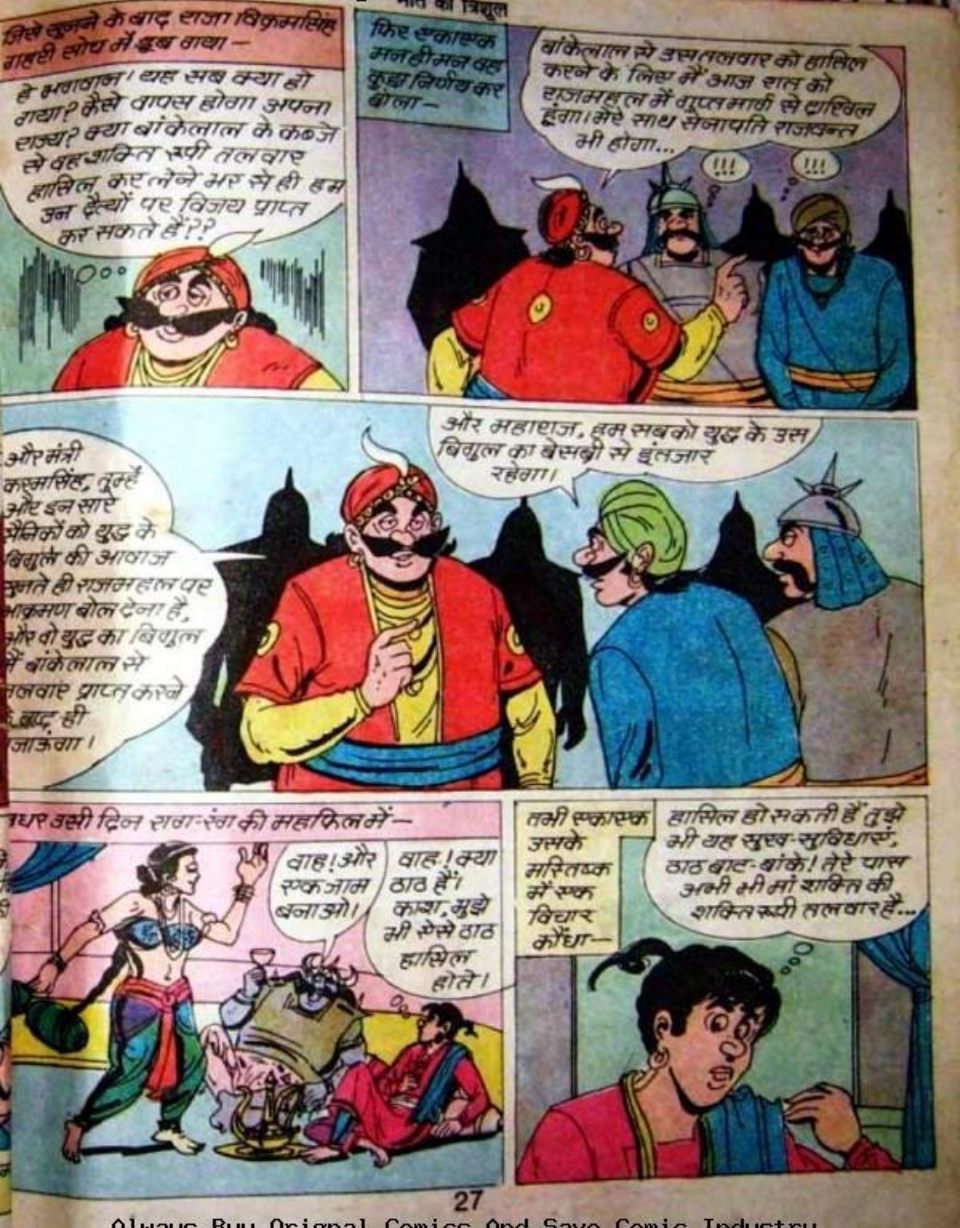

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

फिर जाने कितनी देर की बेहोशी के बाद जब उसकी चेतना वापस लौटी और उसने अपनी आंखें खोलनी चाहीं कि तभी उसके कानों में महामंत्री धरमसिंह की आवाज सुनाई पड़ी –

महाराज, तो इसका मतलब बांकेलाल ने आपको अपनी तरफ से मारकर नदी में फेंक दिया था, और यहां आकर इसने हमसे झूठ बोला था कि आप कुछ दिनों के एकान्त के लिए किसी अज्ञात स्थान पर गये हैं। और इसने यह भी झूठ बोला कि आपने अपने राजकार्य सम्बन्धी सारे अधिकार कुछ दिनों के लिए इसे सौंप दिये हैं।

क्या? तो इसका मतलब राजा विक्रमसिंह जीवित हैं। बेटा बांके, अब तेरी मौत निश्चित है।

हां, इस धूर्त ने मेरे विश्वास का अनुचित फायदा उठाते हुए धोखे से मुझसे अपने नाम अधिकार पत्र लिखवा लिया था।

महाराज, कुछ भी हो इस बार आपकी जान इसकी धूर्तता के कारण ही बची है।

क्या? मेरी धूर्तता से इसकी जान बची है तो इसका मतलब हर बार की तरह इस बार भी मेरी योजना की टांग पहले ही टूट चुकी थी।

क्या मतलब?

महाराज, यदि इसने आपको बेहोश करनदी में न फेंक दिया होता तो आप पृथ्वी पर होते, और फिर आप शिवजी के उस त्रिशूल से कतई नहीं बच सकते थे, जिसे दैत्यराज ने तपस्या द्वारा शिवजी को प्रसन्न कर प्राप्त किया था।

फिर महामंत्री धरमसिंह राजा विक्रमसिंह को शिवजी के त्रिशूल का रहस्य

और महामंत्री की पूरी बात सुनने के बाद आंखें बन्द किए पड़े बांकेलाल की बन्द आंखों के सामने उस घटना का दृश्य घूम गया जबकि –

हूं। तो यह था रहस्य उस त्रिशूल का।

Always Buy Original Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

ओह! तो इसीलिए शिव भगवान ने पाताललोक के राजा देवक्रू को दर्शन देकर बताया था कि वह बीस दिनों तक मुझे पृथ्वी पर न जाने दे क्योंकि उन बीस दिनों तक मुझे पृथ्वी पर खतरा था।

दामादजी, यह पाताललोक की क्या कहानी है!

फिर राजा विक्रमसिंह पाताललोक और उसके राजा देवक्रू के बारे में सब कुछ बताने लगा।

और उसकी पूरी बात सुनते ही आंखें बन्द कि जमीन पर पड़ा बांकेलाल मन ही मन मुस्करा और फिर उसने आंखें खोलीं—

अरे! मैं कहां हूं?

ओह! बांकेलाल को होश आ गया है।

क्यों बांकेलाल? तुम्हें आश्चर्य तो हो रहा होगा मुझे जीवित देखकर, है न?

अवश्य महाराज। लेकिन मैं ऊपर वाले का लाख-लाख शुक्र अदा करता हूं कि आप जीवित हैं और...

बको मत, धूर्त! अपनी तरफ से तो तूने मुझे मारकर नदी में फेंक दिया था और अब चापलूसी करता है। हम अभी तेरी गर्दन उड़ा देंगे।

बेशक आप मेरी गर्दन उड़ा दें महाराज! लेकिन आपके हित के लिए उस समय मैंने जो उचित समझा किया, क्योंकि मैं उस दिन जंगल में शिकार के लिए गया था, तो अचानक ही मैंने देखा कि दैत्यराज के सामने भगवान शिव प्रगट हुए और...

Buy Original Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

...मैंने देखा कि शंकर भगवान ने दैत्यराज को वह त्रिशूल देते हुए कहा था, कि चियालगढ़ के बाद ही तुम सम्पूर्ण पृथ्वी पर विजय पा सकते हो, अतः महाराज उस समय मैंने यह सोचा कि पृथ्वी पर तो आपका जीवन कतई सुरक्षित नहीं है...

...क्योंकि त्रिशूल के हाथ में आते ही दैत्यराज का सबसे पहला लक्ष्य होगा आप की मौत। बस, इसलिए मैंने आपको बेहोश कर नदी में भगवान के भरोसे फेंक दिया था। अब आप उसकी जो भी सजा देना चाहें दे सकते हैं।

ओह! तो यह बात थी। तभी मैं सोच रहा था कि आखिर तुमने रात दैत्यराज को क्यों मार दिया था।

वाकई बांकेलाल, तुमने आज तक जो भी किया हमारी भलाई के लिए किया, लेकिन कितने मूर्ख हैं हम जो तुम्हें गलत समझ बैठे।

व... वो क्या... महाराज, हालात ही कुछ ऐसे बन गए थे कि आपकी जगह कोई भी होता तो मुझे ही गलत समझता।

तभी—

लेकिन बांकेलाल, तुमने हमारे साथ वह दुर्व्यवहार क्यों किया? तुमने हमें क्यों अपमानित किया?

क्षमा करें महाराज, आप लोगों के साथ मैंने जो दुर्व्यवहार किया वो सिर्फ दैत्यराज को अपने विश्वास में लेने के लिए ही किया था। और फिर आप लोग यह भी न भूलें कि यदि उस समय मैंने वह भवन किया होता...

...तो दैत्यराज ने आप सभी को उसी समय मौत के घाट उतार दिया होता।

हां, तुम ठीक कह रहे हो बांकेलाल! हम शर्मिन्दा हैं कि हमने तुम्हें गलत समझा था।

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

BUY TO SAVE TO...
Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry